एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

पशु में सामान्य प्रबंधन क्रियाएं

(*पवन आचार्य)
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: pawanacharya93@gmail.com

कोलोस्ट्रम खिलाना:

- कोलोस्ट्रम प्रसव के बाद स्रावित होने वाला पहला दूध है।
- इसमें बड़ी मात्रा में गामा ग्लोब्युलिन होते हैं जो गाय द्वारा अपने जीवन के दौरान कई रोग पैदा करने वाले जीवों सहित एंटीजन के खिलाफ उत्पादित एंटी-बॉडी होते हैं।
- कोलोस्ट्रम पोषक तत्वों का अत्यधिक समृद्ध स्रोत है जिसमें सामान्य दूध से 7 गुना अधिक प्रोटीन और कुल ठोस पदार्थों का दोगुना होता है, इस प्रकार यह भाग और ठोस सेवन में जल्दी बढ़ावा देता है।
- इसमें अधिक मात्रा में खनिज और विटामिन ए होते हैं जो बीमारी से लड़ने के लिए आवश्यक हैं। कोलोस्ट्रम से इनका अंतर्ग्रहण बछड़े की जीवित रहने की क्षमता को काफी हद तक बढ़ा देता है।
- इन एंटीबॉडीज़ का अवशोषण बछड़े को निष्क्रिय प्रतिरक्षा की छत्रछाया प्रदान करता है।
- कोलोस्ट्रम एक रेचक प्रभाव देता है जो म्यूकोनियम/पहला मल को बाहर निकालने में सहायक होता है।
- पहले 15-30 मिनट में कोलोस्ट्रम खिलाना और उसके बाद लगभग 10-12 घंटों में दूसरी खुराक देना अत्यधिक उपयोगी होगा।
- जीवन के पहले ½ घंटे से 12 घंटे तक बछड़े को उसके शरीर के वजन का 5-8% कोलोस्ट्रम देना चाहिए। फिर दूसरे और तीसरे दिन , यह उसके शरीर के वजन का 10% होना चाहिए।
- अतिरिक्त कोलोस्ट्रम को प्रशीतन द्वारा संग्रहीत किया जा सकता है और अन्य बछड़ों या अनाथ बछड़ों के लिए उपयोग किया जा सकता है।

दूध छुड़ाने का आयु

- बछड़े को अलग करना और भोजन के लिए उसे अपनी माँ से स्वतंत्र बनाना दूध छुड़ाना कहलाता है।
- आजकल, बेहतर प्रबंधन के लिए जल्दी दूध छुड़ाने की सलाह दी जाती है।
- प्रारंभिक दूध छुड़ाने की प्रणाली के तहत, दूध छुड़ाए गए बछड़ों को अलग रखा जाता है और वैज्ञानिक आहार कार्यक्रम और प्रबंधन प्रथाओं का पालन किया जाता है।
- इस विधि में, गाय को कोलोस्ट्रम खिलाने के बाद अपने बछड़े से दूध पीने की अनुमति नहीं दी जाती है।
- इसके बजाय, गाय का पूरा दूध निकाल लिया जाता है और बछड़े को आवश्यक मात्रा में पूरा दूध या मलाई रहित दूध पिलाया जाता है।
- दूध छुड़ाए गए बछड़ों को बाल्टी/निपल बाल्टी से दूध पीने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि दूध पिलाने का प्रबंधन आसान हो सके।

- दूध छुड़ाए गए बछड़ों का हर सप्ताह वजन किया जाना चाहिए और खिलाए जाने वाले दूध की मात्रा की गणना तदनुसार की जानी चाहिए।

खंडन

- कम उम्र में, जब सींग की जड़ कली अवस्था में होती है, सींग वृद्धि को रोकना डिस्बडिंग कहलाता है।
- यह मुख्य रूप से विदेशी और संकर नस्ल के मवेशियों में किया जाता है।
- सींग वाले मवेशी एक-दूसरे को चोट पहुंचाते हैं जिससे भारी आर्थिक नुकसान हो सकता है।
- सींग वाले जानवर संचालक के लिए ख़तरा होते हैं और बिना सींग के इन्हें संभालना आसान हो जाता है।
- शेडों में जानवरों के लिए जगह कम करने के लिए भी छंटाई आवश्यक है।
- बछड़े का 15-20 दिन की आयु में ही परित्याग कर देना चाहिए।
- इसे गर्म लोहे और रसायनों का उपयोग करके किया जाता है।
- विद्युत गर्म लोहा रक्तहीन विधि है इसका प्रयोग किसी भी मौसम में किया जा सकता है।
- बिजली से गर्म की गई लोहे की छड़ में एक स्वचालित नियंत्रण होता है जो तापमान को लगभग 1000 0 F पर बनाए रखता है, इसे सींग की कली पर l0 सेकंड के लिए लगाना सींग के ऊतकों को नष्ट करने के लिए पर्याप्त है।
- कास्टिक पोटाश या कास्टिक सोडा एक सामान्य रसायन है जिसका उपयोग विखंडन के लिए किया जाता है।
- ये पेस्ट या घोल के रूप में उपलब्ध हैं।
- आंखों को रसायनों से बचाने के लिए सींग की कलियों और आसपास के क्षेत्र के बालों को, वैसलीन की एक अंगूठी से क्लिप करें।
- रक्तस्राव होने तक कलियों पर रसायन रगड़ें।

कान टैगिंग

- यह कृषि पशुओं की पहचान का सबसे लोकप्रिय तरीका है।
- यह आसान पर्यवेक्षण, प्रबंधन और सटीक रिकॉर्ड रखरखाव की सुविधा प्रदान करता है।
- इसमें टैगिंग संदंश और टैग की आवश्यकता होती है
- टैग में संख्याएँ जानवर की त्वचा के रंग के आधार पर विपरीत और स्पष्ट शैली की होनी चाहिए।
- टैगिंग के लिए कान में टैग का स्थान आधार और कान के सिरे के बीच का आधा होना चाहिए।
- एप्लिकेटर से कान को छेदकर कान में ईयर टैग लगाया जाता है।

बधिया करना

- पशुओं को विनम्र बनाने, अंधाधुंध प्रजनन को नियंत्रित करने और कुछ जननांग रोगों को रोकने के लिए बधियाकरण किया जाता है।
- यह शरीर का वजन तेजी से बढ़ाने और मांस की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए भी किया जाता है।
- बधियाकरण से गर्दन भी पतली हो जाती है जिससे विशेष रूप से काम करने वाले मवेशियों में जूए की सही फिटनेस में मदद मिलती है।
- यह युवा पशुओं में 2-3 महीने के भीतर शल्य चिकित्सा पद्धति और इलास्ट्रेटर विधि के माध्यम से किया जाता है।
- एक वर्ष की आयु के भीतर वयस्क पशुओं में, बर्डिज़ो कैस्ट्रेटर का उपयोग करके बंद विधि के माध्यम से बधियाकरण किया जाता है।
- बर्डिज़ो कैस्ट्रेटर शुक्राणु कॉर्ड को कुचल देता है और इस प्रकार वृषण में रक्त को रोक देता है और परिणामस्वरूप वृषण शोष और शुक्राणु उत्पादन बंद हो जाता है।

- बधियाकरण ठंड के मौसम में किया जाना चाहिए और मक्खी की समस्या के डर से बरसात के मौसम से सख्ती से बचना चाहिए।
- बधिया किए गए पशुओं को कुछ दिनों तक साफ और आरामदायक बाड़े में आराम देना चाहिए।
- बर्डीज़ो कैस्ट्रेटर विधि सुरक्षित, त्वरित और संक्रमण होने की कम संभावना है।
- इलास्ट्रेटर के छल्ले जानवर के लिए बहुत दर्दनाक होते हैं और इसलिए आमतौर पर इसकी अनुशंसा नहीं की जाती है।

वयस्क पशुओं के लिए टीकाकरण कार्यक्रम

टीका/महीने

- पैर और मुँहपका/जनवरी से फरवरी
- गर्भपात ब्रुसेलोसिस/मार्च से अप्रैल
- एंथ्रेक्स रोग/अप्रैल से मई
- खुरपका और मुँहपका रोग (वर्ष में दो बार)/जून से जुलाई
- काला क्वार्टर/अगस्त से सितंबर (मानसून से पहले)
- रक्तस्रावी सेप्टीसीमिया/सितंबर से अक्टूबर

कीटाणुशोधन

- कीटाणुशोधन का अर्थ है किसी स्थान से रोगजनक सूक्ष्मजीवों को नष्ट करना ताकि वह स्थान संक्रमण से मुक्त हो जाए।
- भौतिक, रासायनिक और गैसीय एजेंटों की मदद से कीटाणुशोधन लाया जा सकता है।
- पशु चिकित्सा पद्धति में रासायनिक कीटाणुनाशकों का बहुत व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, क्योंकि उनके जलीय घोल तैयार करना आसान होता है।
- रासायनिक कीटाणुनाशक सस्ते होते हैं और इनका प्रभाव व्यापक होता है।
- रासायनिक कीटाणुनाशक अच्छे कीटाणुनाशक होते हैं, न तो सामग्री पर दाग पड़ता है और न ही क्षति होती है और वे अवांछित गंध से मुक्त होते हैं।
- बोरिक एसिड (4-6%), सोडियम हाइड्रॉक्साइड (1, 2 और 5%) और कैल्शियम हाइड्रॉक्साइड (चूना पानी, बुझा हुआ चूना) आमतौर पर पशु घरों के कीटाणुशोधन के लिए उपलब्ध हैं।
- फॉर्मेल्डिहाइड (5-10%) का उपयोग जानवरों के घरों के फर्श धोने के लिए किया जा सकता है।
- ग्लूटाराल्डिहाइड 2% जलीय घोल उपकरणों के स्टरलाइज़ेशन के लिए उपयोगी है।
- चतुर्थक अमोनियम यौगिक; cetavlon; सेवलॉन डिटर्जेंट और साबुन हैं, जिनका उपयोग मुख्य रूप से धोने के लिए किया जाता है। वे ग्रीस, गंदगी और अन्य कार्बनिक पदार्थ हटा देते हैं।
- ब्लीचिंग पाउडर (कैल्शियम हाइपोक्लोराइट), कॉपर सल्फेट (5 मिलीग्राम/लीटर) और पोटेशियम परमैंगनेट (1-2 मिलीग्राम/लीटर) आमतौर पर कीटाणुनाशक उपयोग किए जाते हैं।
- कैल्शियम ऑक्साइड का उपयोग शवों को दफनाने और भूमि पर लगाने के लिए दफन गड्ढों में किया जाता है।
- कैल्शियम हाइड्रॉक्साइड (स्लेक्ड) को 5% फिनोल के साथ मिलाकर आमतौर पर फार्म हाउसों की दीवारों की सफेदी में कीटाणुनाशक के रूप में उपयोग किया जाता है।
- 1 किलो ब्लीचिंग पाउडर (क्लोरीनीकृत चूना) को 25 लीटर पानी के साथ इस्तेमाल करने से एक बहुत अच्छा दुर्गन्ध बन जाता है।

- फार्म भवनों के लिए फिनोल (0.5 से 5%) और सोडियम कार्बोनेट (2.5-4%) का उपयोग किया जा सकता है।

संगरोधन

- संगरोध स्पष्ट रूप से स्वस्थ जानवरों को अलग करने की प्रक्रिया है (विशेष रूप से जानवर को पहली बार झुंड में या देश में लाया जा रहा है) जो संक्रमण के जोखिम से अवगत कराया गया है।
- संगरोध अवधि बीमारियों की ऊष्मायन अवधि पर निर्भर करती है।
- व्यवहार में, 30 से 40 दिनों की न्यूनतम अवधि को आम तौर पर उचित अवधि के रूप में स्वीकार किया गया है; लेकिन रेबीज जैसी बीमारियों के मामले में यह अवधि 6 महीने तक है।
- सामान्यतः नये खरीदे गये पशुओं एवं शो से लौटे पशुओं को क्वारेंटाइन शेड में रखा जाना चाहिए।
- शेड का निर्माण खेत के प्रवेश द्वार पर करना चाहिए।
- एक्टोपारासाइट्स को हटाने के लिए उन्हें 25 वें /26 वें दिन डुबोया या स्प्रे किया जाना चाहिए।

बीमार पशुओं का अलगाव

- अलगाव किसी संक्रामक बीमारी के फैलने की स्थिति में प्रभावित और संपर्क में आए जानवरों को स्पष्ट रूप से स्वस्थ दिखने वाले जानवरों से अलग करने की प्रक्रिया है।
- ऐसे अलग किए गए जानवरों को अधिमानतः सामान्य पशु घर से दूर स्थित एक अलग अलगाव शेड में रखा जाना चाहिए।
- यदि अलग शेड उपलब्ध नहीं है तो अलगाव के लिए जानवरों को शेड के एक छोर पर जितना संभव हो सके स्वस्थ स्टॉक से दूर बांधा जाना चाहिए।
- बीमार जानवरों के परिचारक और उपकरण आदर्श रूप से अलग होने चाहिए।
- यदि व्यावहारिक कारणों से यह संभव न हो तो स्वस्थ पशुधन के बाद ही बीमार पशुओं की देखभाल की जानी चाहिए।
- आइसोलेशन समूह में उपयोग के बाद उपकरण को पूरी तरह से कीटाणुरहित किया जाना चाहिए।
- परिचारक को अपने हाथ, पैर और गमबूट एंटीसेप्टिक लोशन से धोने चाहिए और अपने कपड़े बदलने चाहिए।
- अलग-थलग किए गए जानवरों को पूरी तरह से ठीक होने और संक्रमण फैलने की संभावना खत्म होने के बाद ही स्वस्थ झुंड में वापस लाया जाता है।

पशुओं का बीमा करना

- यह किसानों और पशुपालकों को मृत्यु के कारण उनके पशुओं के किसी भी संभावित नुकसान के खिलाफ सुरक्षा तंत्र प्रदान करता है और पशुधन और उनके उत्पादों में गुणात्मक सुधार प्राप्त करता है।
- किसान (छोटे/बड़े/सीमांत) और पशुपालक जिनके पास संकर नस्ल और अधिक दूध देने वाली गाय और भैंस हैं, पात्र लाभार्थी हैं।
- कवर किए गए जोखिमों में बाढ़, चक्रवात, अकाल या किसी अन्य आकस्मिक परिस्थितियों, बीमारियों, सर्जिकल ऑपरेशन, दंगा, हड़ताल, आतंकवाद और भूकंप सहित दुर्घटना के कारण मवेशियों की मौत शामिल है।
- पशुओं का बीमा उनके वर्तमान बाजार मूल्य के अधिकतम (100%) मूल्य पर किया जा सकता है।
- जनरल इंश्योरेंस कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (जीआईसी), न्यू इंडिया इंश्योरेंस और ओरिएंटल इंश्योरेंस मवेशी और भैंस बीमा प्रदान करने वाली प्रमुख बीमा कंपनियां हैं।

- पशुओं का बीमा कराने के लिए किसानों और पशु मालिकों को सबसे पहले अपने नजदीकी सरकारी पशु चिकित्सकों/योग्य पशु चिकित्सकों/पशुपालन विभाग से संपर्क करना होगा।

शव का निपटान

- शव के सुरक्षित निपटान का प्राथमिक उद्देश्य अन्य संवेदनशील जानवरों या मनुष्यों में बीमारी की रोकथाम और प्रसार को सुनिश्चित करना है।
- जानवरों के शवों को नैकरीज़ में भेजकर या दफनाकर या जलाकर उनका निपटान किया जा सकता है।
- शव को उसकी त्वचा में दफनाया जाना चाहिए, पर्याप्त मात्रा में बुझे हुए चूने या अन्य कीटाणुनाशक से ढका जाना चाहिए।
- मृत पशुओं को पीठ पर रखना चाहिए तथा पैर ऊपर की ओर रखने चाहिए।
- एंथ्रेक्स के मामले को छोड़कर सभी मामलों में त्वचा को गड्ढे के अंदर काटा जाता है।
- शव को सतही दहन और फ्लेम गन विधि से जलाया जा सकता है।

रिकार्ड रखरखाव

- पशुपालन में रिकार्ड रखना एक आवश्यक अभ्यास है।
- इसके लिए प्रबंधक या किसान द्वारा फार्म कार्यालय में दैनिक, नियमित विवरण दर्ज करना आवश्यक है।
- झुंड में प्रत्येक जानवर की पहचान उपलब्ध रिकॉर्ड का उपयोग करके उनके उत्पादन प्रदर्शन के आधार पर की जाती है।
- रिकॉर्ड की मदद से उत्पादन स्तर के आधार पर करीबी प्रबंधन और उचित फीडिंग स्तर प्रदान किया जा सकता है।
- इससे कटाई और चयन की दक्षता में भी वृद्धि होगी जिससे लाभ दर में वृद्धि होगी।
- उत्पादन प्रदर्शन पर भोजन, प्रबंधन और प्रजनन के सापेक्ष प्रभाव का आकलन किया जा सकता है।
- प्रदर्शन रिकॉर्ड के आधार पर पशुधन विपणन को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- नस्लों के बीच और भीतर झुंड के प्रदर्शन की तुलना संभव है।
- प्रजनन कार्यक्रमों में व्यापक उपयोग के लिए बेहतर स्टॉक की पहचान की जा सकती है।
- झुंड और नस्ल पंजीकरण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है।

डेयरी फार्म में रखे जाने वाले रजिस्टर

- दैनिक स्टॉक रजिस्टर
- जन्म/ब्याओ का रजिस्टर
- बछड़ा/युवा स्टॉक रजिस्टर
- वयस्क स्टॉक रजिस्टर
- प्रजनन रजिस्टर/एआई रजिस्टर
- तौल/वृद्धि रजिस्टर
- दूध की उपज एवं वितरण रजिस्टर
- बिक्री/निपटान रजिस्टर
- चारा/फ़ीड स्टॉक रजिस्टर
- प्राप्ति/आय रजिस्टर
- झुंड स्वास्थ्य रजिस्टर
- मृत्यु रजिस्टर